गोपाल राजू की पुस्तक

'अंध विश्वास - सत्य और तथ्य' का सार संक्षेप-

परमात्मा साकार है अथवा निराकार

परमात्मा, ईश्वर, भगवान अनेक नामों वाली यह कल्पना क्या साकार है अथवा निराकार? इसकी सत्ता का वास्तव में कोई प्रमाण है? यदि परमात्मा का कोई अस्तित्व है तब वह दिखाई अवश्य देना चाहिए? ऐसे अनेक प्रश्न नास्तिक करते हैं। उनका यह प्रश्न अथवा कहें - उनकी इस विषय को लेकर अज्ञानता सत्य भी हैं ऐसे लोग केवल भौतिक युग में जीते हैं। आस्था और परमात्मा सूक्ष्मवाद का विषय है और स्थूलवाद केवल पंच तत्वों से बनी इन्द्रियों का। ऑखें केवल वाह्य दृष्य दिखाती हैं। वह अपना स्वयं का स्वरुप देख पाने में भी सक्षम नहीं हैं। अपनी बनावट के सम्बन्ध में भी उन्हें प्रत्यक्ष कुछ भी अनुभव नहीं हो पाता। उनकी सीमितता देखिए - वह शरीर के अन्दर होने वाली हृदय की धड़कन और आपके फेफड़ों में श्वसन क्रिया भी नहीं सुन पातीं। तत्व से बाहर की वस्तुओं को स्पर्श करके अनुमान लगाया जा सकता है। परन्तु इससे छोटी परिधि से बढ़कर बहुत दूर वाले पदार्थों की गतिविधियों की जानकारी भी इन्द्रियॉ प्राप्त नहीं कर सकतीं। उनकी सीमा बहुत ही संकुचित है। पंच तत्वों से बनी इन्द्रियों का सम्पर्क और अनुभव केवल पदार्थ जगत तक ही सीमित है।

स्थूल दृष्टि केवल इतना ही समझा सकती हैं कि जो प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है, बस वही है। मन-मस्तिष्क को भी ग्यारहवीं इन्द्रिय माना गया है। उसकी भागने की सीमा भी सीमित

है। दूसरी ओर नास्तिक यह मान लेते हैं कि शरीर के भीतर कुछ है - सम्भवतः आत्मा, प्राण आदि जो मृत्यु के बाद शरीर छोड़ देता है। परमात्मा अर्थात् परम आत्मा को जानने के लिए पहले आत्मा को जानना बहुत आवश्यक है। इसीलिए बाहर मत भागो अपने अन्दर झॉकों। वहॉ ही खोजों। बहुत सरलता से परमात्मा का अस्तित्व समझ में आ जाएगा। नास्तिक कहता है - मैंने चारों धाम यात्रा कर ली है। काबा का पत्थर चूम आया। हाजी मलंग दरगाह में और हेमकुण्ड साहिब तथा ननकाना साहिब में माथा टेक आया। वैष्णों माता के दरबार में भी नाक रगड़ आया। कहने का सार यह है कि अनेकानेक तीर्थ, देवी-देवताओं, पीर-मुर्शिदों के हाथ चूमकर अनकी दुआऍं ली हैं। अब मेरा जीवन सार्थक हो गया। मैं स्वर्ग में जाऊॅगा।

कोरा भ्रम है मेरे प्रिय पाठकों। जब तक अन्तर्मन में प्रकाश नहीं जगेगा। जब तक परमात्मा का एकीकार नहीं होगा, सब कुछ व्यर्थ है। केवल एक आत्मिक शान्ति मात्र है। दिल को धोखा देने वाली बात है। जैसे बच्चे को टॉफी देकर बहला लिया हो।

कठपुतली का तमाशा बाजीगर की ऊॅगलियों से बंधे हुए तार के सहारे होता है। चेतना ही शरीर से क्रियाऍं और मस्तिष्क से विचार धारणाएं सम्पन्न कराती हैं। शरीरांत होने पर उसके सभी अंग यथावत् रहने पर भी सारी हलचलें समाप्त हो जाती हैं। कुछ समय बाद शरीर के घटक भी सड़ने-गलने और बिखरने लगते हैं। पंचतत्व में समाना चाहते हैं। जीवधारियों का जीवन केवल प्राण चेतना की उपस्थिति मात्र है। वही 'स्व' है। वही 'अहं' है और वही आत्मा है। उसका अस्तित्व जन्म लेने से पूर्व भी था और जीवान्त के बाद भी है।

नास्तिक फिर भी प्रश्न करेगा - इससे परमात्मा के अस्तित्व का ज्ञान कैसे हुआ? यह कैसे पता चले कि आप वास्तव में हैं? वह स्पष्टीकरण देगा - छः फीट का मैं साक्षात् खड़ा हूॅ। सब देख सकते हैं। कोई भी मेरे अस्तित्व को अस्वीकार नहीं करेगा। मेरे सारे अंग आपके सामने हैं। वह कहेगा - प्रमाण के लिए आप मुझे छूकर देख लें। यह मेरा सिर है। यह मेरे नाम, कान हैं। यह मेरा पेट है आदि . . .।

किसी व्यक्ति का सिर, ऑख, पेट आदि होने से अथवा उसके अस्तित्व मात्र से यह कदापि नहीं स्पष्ट नहीं होता कि वह वास्तव में है। जिन अंगों का नास्तिक वर्णन कर रहा है वह सब तो स्थूल है। 'मैं' कहॉ है इन अंगों में? 'स्व' हॉ है? 'अहमं' कहॉ है और आत्मा कहॉ है? शरीर में इस आत्मा का स्थान कहॉ है? क्या हृदय में? यदि उसे काटकर देखा जाए तो क्या वहॉ आत्मा से साक्षातकार हो जाएगा? होगा, परन्तु सूक्ष्मवाद में जाने के बाद। नास्तिक तो यही

मानेगा कि उसका शरीर तो है, परन्तु वह स्थूल है। 'मैं', 'अहमं' 'आत्मा' आदि कुछ ऐसा है जो चेतन है। शरीर को चला रहा है। क्योंकि यह निकला तो शरीर का कोई अस्तित्व नहीं रहा जाएगा। शरीर स्थूल है और असको चलाने वाला जीव सूक्ष्म। विज्ञान यहॉ शान्त है। उसके पास इस सूक्ष्म में जाने का कोई मार्ग नहीं है, कोई साधन नहीं है।

यह सब स्वीकार करते हैं कि शरीर के प्रत्येक अंग यहॉ तक कि रोम-रोम को संचालित करने वाला सूक्ष्म-सा कुछ है अवश्य। जब यह संचालक शरीर से निकल जाता है तो शरीरान्त हो जाता है। यह तो एक बहुत ही सीमित तथ्य हुआ। अब यदि पूरे ब्रह्माण्ड की कल्पना करें। पूरे का पूरा ब्रह्माण्ड और उसका कण-कण कहीं न कहीं किसी के द्वारा संचालित हो रहा है। ठीक हमारे शरीर के अंगों की तरह। जैसे शरीर का संचालन आत्मा करता है ठीक उसी प्रकार पूरे ब्रह्माण्ड का संचालन परमात्मा कर रहा है। पूरे ब्रह्माण्ड को एक पिण्ड मानकर फिर कल्पना करें। ब्रह्माण्ड के सारे घटक उसके अंग स्पष्ट हो जाएंगे। यह भी स्पष्ट हो जाएगा कि उन घटकों को परमात्मा संचालित कर रहा है। जैसे आत्मा अदृष्य है, केवल सूक्ष्म नेत्रों द्वारा ही देखा जाता है, उसी प्रकार परमात्मा भी अदृष्य है। बस नियमबद्ध अपना कार्य कर रहा है। जैसे व्यक्ति पूरे शरीर में व्याप्त है वैसे ही परमात्मा पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। जैसे व्यक्ति का शरीर जड़ है परन्तु उसमें व्याप्त आत्मा चेतन उसी प्रकार ब्रह्माण्ड जड़ है और उसको चलाने वाला चेतन। जैसे जड़ और चेतन के एकीकार होने से व्यक्ति बना। वैसे ही ब्रह्माण्ड (जड़ और परम चेतन मिलने से) परमात्मा कहलाया।

परमात्मा ब्रह्माण्ड के प्रत्येक घटक में स्थित होकर उसकी सत्ता बनाए हुए है। जैसे सूर्य में व्याप्त वह परम चेतन मानव कल्याण और जीवन दाता है। नदी में जल है और गगन में वह मेघ। इस प्रकार वह अनन्त रुपवाला हो गया। इन रुपों को ही सूर्य देव, चंद्र देव, वरुण देव, इन्द्र देव आदि नामों से जाना जोने लगा। इसके बाद जब स्पष्ट होगा जब आध्यात्मवाद में जाकर सूक्ष्मदर्शी बनने की क्षमता पा ली जाए जो भौतिक विज्ञान का विषय नहीं है।

मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)

(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.

website : www.astrotantra4u.com

E-mail:gopalraju12@yahoo.com